डॉ. रॉबर्ट सी. न्यूमैन, चमत्कार, सत्र 4, चमत्कारों की उदारवादी अस्वीकृति का जवाब

© 2024 रॉबर्ट न्यूमैन और टेड हिल्डेब्रांट

यह हमारा कोर्स है, चमत्कारी और यीशु के चमत्कार, पहले खंड का चौथा भाग, जिसे हम चमत्कारी कहते हैं, आपत्तियों का उत्तर देना। यहाँ, हम चमत्कारों की घटना के खिलाफ प्रस्तावित कई प्रमुख तर्कों का जवाब देंगे। आगे की चर्चा के लिए, देखें गीस्लर, चमत्कार इन द मॉडर्न माइंड, 1992, कॉलिन ब्राउन, चमत्कार इन द क्रिटिकल माइंड, 1984, गीवेट और हेबरमास, इन डिफेंस ऑफ मिरेकल्स, 1997। [क्रेग कीनर के 2 खंड भी । चमत्कार: नए नियम के खातों की विश्वसनीयता, 2011]।

सबसे पहले, हम चमत्कारों की निगमनात्मक असंभवता को देखते हैं, बरूच स्पिनोज़ा। यहाँ मैं जो तर्क दे रहा हूँ वह स्पिनोज़ा के तर्क का गीस्लर द्वारा किया गया थोड़ा सा सरलीकरण है। सबसे पहले, चमत्कार प्राकृतिक कानून का उल्लंघन हैं।

मैं पहले प्रत्येक तर्क दूंगा और फिर वापस आकर बिंदुवार उसकी आलोचना करूंगा। दूसरा, प्राकृतिक नियम अपरिवर्तनीय हैं। तीसरा, अपरिवर्तनीय नियमों का उल्लंघन करना असंभव है।

इसलिए, चमत्कार असंभव हैं। स्पिनोज़ा के अनुसार, चमत्कार प्राकृतिक कानून का उल्लंघन हैं। कुछ चमत्कार संभवतः प्राकृतिक कानून का उल्लंघन हैं, हालांकि उनमें से कई किसी न किसी तरह से प्राकृतिक कानून को दरकिनार कर सकते हैं, जैसे हम कलम या पेंसिल उठाकर गुरुत्वाकर्षण को दरकिनार कर देते हैं।

तो, एक, चमत्कार प्राकृतिक कानून का उल्लंघन हैं, शायद कुछ मामलों में यह सच है और दूसरों में झूठ। प्राकृतिक कानून अपरिवर्तनीय हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम प्राकृतिक कानून से क्या मतलब रखते हैं।

अगर हम प्राकृतिक कानून को अपरिवर्तनीय मानते हैं, तो हो सकता है कि प्राकृतिक कानून जैसी कोई चीज़ ही न हो। किसी भी मामले में, हम यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त नहीं जानते हैं कि प्रकृति में हम जिन नियमितताओं के बारे में जानते हैं, वे अपरिवर्तनीय हैं। और किसके लिए अपरिवर्तनीय? जाहिर है, मनुष्य गुरुत्वाकर्षण के स्थिरांक को नहीं बदल सकते हैं या न्यूटन के गति के नियमों को निलंबित नहीं कर सकते हैं, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि भगवान ऐसा नहीं कर सकते हैं।

तीसरा, अपरिवर्तनीय कानूनों का उल्लंघन करना असंभव है। कथन तीन तब तक सत्य है जब तक हम यह कहकर इसे स्पष्ट करते हैं कि किसी के लिए उन कानूनों का उल्लंघन करना असंभव है जो उनके लिए अपरिवर्तनीय हैं। चौथा, इसलिए, चमत्कार असंभव हैं।

खैर, अगर कुछ मामलों में एक बात सच नहीं है, और दूसरी बात, प्राकृतिक कानून अपरिवर्तनीय है, या तो एक खाली वर्ग हो सकता है या भगवान के लिए अपरिवर्तनीय नहीं है, तो इसका मतलब है कि स्पिनोज़ा का तर्क सही नहीं है। एक और निगमनात्मक सूत्रीकरण। एक, चमत्कार प्राकृतिक कानून का उल्लंघन है।

दूसरा, किसी कानून का उल्लंघन करना अवैध, अनैतिक, तर्कहीन या घटिया है, अगर आप चाहें तो किसी सौंदर्य संबंधी कानून का उल्लंघन करना। ईश्वर अवैध, अनैतिक, तर्कहीन या घटिया नहीं है। इसलिए, ईश्वर कम से कम चमत्कार तो नहीं कर सकता, हालाँकि शायद शैतान कर सकता है।

इसके जवाब में, चमत्कार प्राकृतिक कानून का उल्लंघन है, स्पिनोज़ा के पहले कथन जैसी ही समस्या। कानून का उल्लंघन करना अवैध, अनैतिक, तर्कहीन या घटिया है। कथन दो मानता है कि प्राकृतिक कानून को नागरिक कानून की किसी एक श्रेणी में रखा जा सकता है, जिसका उल्लंघन करना अवैध है; नैतिक कानून, जिसका उल्लंघन करना अनैतिक है; तार्किक कानून, जिसका उल्लंघन करना तर्कहीन है; या सौंदर्य संबंधी कानून, जिसका उल्लंघन करना घटिया है।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है। प्राकृतिक नियम का उल्लंघन करना सिर्फ़ चमत्कारी होना है, जिस तरह से बाइबल में परमेश्वर को नियमित रूप से चित्रित किया गया है। परमेश्वर अवैध, अनैतिक, तर्कहीन या घटिया नहीं है, यह सच है।

इसलिए, कम से कम भगवान चमत्कार नहीं कर सकते, हालाँकि शायद शैतान कर सकता है। एक और विशेष रूप से दो के साथ समस्याएँ इस तर्क को अमान्य करती हैं। चमत्कारों की प्रेरक असंभावना, डेविड ह्यूम।

ह्यूम के तर्क का मेरा संस्करण इस प्रकार है। पहला, अनुभव ही पदार्थ के प्रभाव के बारे में सभी निर्णयों के लिए हमारा एकमात्र मार्गदर्शक है। दूसरा, प्रकृति के नियम एक दृढ़ और अपरिवर्तनीय अनुभव द्वारा स्थापित होते हैं। तीसरा, गवाहों की विश्वसनीयता में हमारा विश्वास आमतौर पर तथ्यों से सहमत रिपोर्टों पर आधारित होता है। चौथा, चमत्कार प्राकृतिक कानून का उल्लंघन है। पाँचवाँ, इस प्रकार, चमत्कार उन साक्ष्यों के विरुद्ध जाते हैं जिनके द्वारा हम पदार्थ के प्रभाव को निर्धारित करते हैं। छठा, इसलिए, किसी को चमत्कार के बारे में गवाही तब तक स्वीकार नहीं करनी चाहिए जब तक कि सभी विकल्प चमत्कार से अधिक चमत्कारी न हों - ह्यूम के प्रति प्रतिक्रिया। पदार्थ के प्रभाव के बारे में सभी निर्णयों के लिए अनुभव ही हमारा एकमात्र मार्गदर्शक है।

यह एक शुद्ध अनुभववादी कथन है कि हम कैसे जानते हैं, और शुद्ध अनुभववाद संतोषजनक नहीं हो सकता है। फिर भी ह्यूम यह पूछने में सही हैं कि चमत्कारों में विश्वास के लिए हम क्या वारंट पेश कर सकते हैं। यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि झूठे रहस्योद्घाटन को स्वीकार करने से बचने के लिए रहस्योद्घाटन को भी किसी तरह से परखने की आवश्यकता है।

हर चीज़ को परखने के लिए बाइबल के आदेशों की तुलना करें। गलातियों 6:3-5, 1 थिस्सलुनीकियों 5: 19-21, 1 यूहन्ना 4:1, व्यवस्थाविवरण 13:1-3, व्यवस्थाविवरण 18:18-22. तो, हम इनमें से कुछ अंशों को देखते हैं, बाइबल मूल रूप से परीक्षण पर आधारित है।

गलातियों 6:3, 4, और 5. यदि कोई कुछ न होने पर भी अपने आप को कुछ समझता है, तो वह अपने आप को धोखा देता है। हर एक को अपने कामों को परखना चाहिए। तब वह अपने आप पर गर्व कर सकेगा और अपने आप को किसी और से तुलना नहीं करेगा, क्योंकि हर एक को अपना ही बोझ उठाना चाहिए।

इसलिए, बाइबल निश्चित रूप से संकेत देती है कि हमें खुद को परखने की ज़रूरत है। 1 थिस्सलुनीकियों 5:19-20. आत्मा की आग को मत बुझाइए।

भविष्यवाणियों को तुच्छ न समझें। हर चीज़ को परखें। अच्छी बातों को पकड़े रहें।

1 यूहन्ना 4:1. प्रिय मित्रों, हर आत्मा पर विश्वास मत करो, बल्कि आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं, क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता संसार में निकल रहे हैं। व्यवस्थाविवरण 13:1-3. यदि कोई भविष्यद्वक्ता या मेरे स्वप्नों का पूर्वज्ञानी तुम्हारे बीच में आकर तुम्हें कोई अद्भुत चिन्ह या चमत्कार बताए, और यदि वह चिन्ह या चमत्कार जिसके विषय में उसने कहा है, घटित हो जाए, और वह कहे, आओ हम दूसरे देवताओं के पीछे चलें, जिन्हें तुम नहीं जानते, और उनकी पूजा करें, तो तुम उस भविष्यद्वक्ता या स्वप्नदर्शी की बातें न सुनना।

यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें परख रहा है कि क्या तुम उससे अपने पूरे मन और पूरे प्राण से प्रेम करते हो। व्यवस्थाविवरण 18:18-22 परमेश्वर मूसा से कहता है, “मैं इस्राएलियों के लिए उनके भाइयों में से मूसा के समान तुम्हारे समान एक नबी को खड़ा करूँगा।”

मैं अपने वचन उसके मुँह में डालूँगा, और वह उन्हें वही सब बताएगा जो मैं उसे आज्ञा दूँगा । यदि कोई मेरे वचनों को नहीं सुनता है जो नबी मेरे नाम से कहता है, तो मैं स्वयं उसे जवाब दूँगा। लेकिन जो नबी मेरे नाम से कुछ ऐसा कहने का दुस्साहस करता है जिसे कहने की मैंने उसे आज्ञा नहीं दी है, या जो नबी दूसरे देवताओं के नाम से बोलता है, उसे अवश्य ही मृत्युदंड दिया जाना चाहिए।

तुम अपने आप से कह सकते हो, हम कैसे जान सकते हैं कि कोई संदेश प्रभु द्वारा नहीं बोला गया है? यदि कोई भविष्यवक्ता प्रभु के नाम से जो घोषणा करता है वह घटित नहीं होती या सच नहीं होती, तो वह संदेश प्रभु द्वारा नहीं बोला गया है। उस भविष्यवक्ता ने अहंकार से बात कही है। उससे मत डरो।

ह्यूम का जवाब। सबसे पहले हमने जो नियम देखा, वह यह है कि यद्यपि अनुभववाद चीजों को जानने का एकमात्र तरीका नहीं हो सकता है, फिर भी हमारे पास चीजों का परीक्षण करने की जिम्मेदारी है, यहां तक कि रहस्योद्घाटन आदि का भी। ह्यूम का दूसरा दावा यह है कि प्रकृति के नियम दृढ़ और अपरिवर्तनीय अनुभव द्वारा स्थापित होते हैं।

अनुभवजन्य रूप से परिभाषित प्रकृति के नियम अनुभव, अवलोकन और प्रयोग द्वारा स्थापित होते हैं, और उन्हें नियम कहने के लिए बहुत दृढ़ होना चाहिए। फिर भी यह स्पष्ट नहीं है कि किस अर्थ में अनुभव अपरिवर्तनीय है। क्या ह्यूम का मतलब है कि कोई अपवाद कभी नहीं देखा गया है? यदि ऐसा है, तो वह अपने उत्तर को कथन 2 में गुप्त रूप से आयात करके चमत्कार की घटना के प्रश्न को टाल देता है।

3. गवाहों की विश्वसनीयता में हमारा विश्वास उनकी रिपोर्टों पर आधारित है, जो आमतौर पर तथ्यों से सहमत होती हैं। किसी विशेष गवाह की विश्वसनीयता में हमारा विश्वास इससे कुछ अधिक जटिल है। यदि वह आमतौर पर केवल सच बोलता है या सही निर्णय लेता है, तो हम शायद उसकी रिपोर्टों पर ज्यादा भरोसा नहीं करेंगे। गवाहों की संख्या, उनके ज्ञात चरित्र और झूठ बोलने से उन्हें जो कुछ भी प्राप्त हो सकता है, उसका कुछ संयोजन आमतौर पर हमारी गणनाओं में शामिल होगा।

4. चमत्कार प्राकृतिक कानून का उल्लंघन हैं। अजीब बात यह है कि 4 अनुभवजन्य अर्थ में सत्य है, लेकिन स्पिनोज़ा द्वारा अपने कथन 1 निगमनात्मक अर्थ में इसका उपयोग किए जाने पर यह सत्य नहीं है। चमत्कार स्पष्ट रूप से हमारे सामान्य अनुभव के विपरीत हैं।

5. इस प्रकार, चमत्कार उन साक्ष्यों के विरुद्ध जाते हैं जिनके द्वारा हम तथ्यों के मामलों का निर्धारण करते हैं। ह्यूम यहाँ गलत हैं, जब हम 3 को समायोजित करते हैं जैसा कि हमने ऊपर सुझाया है, लेकिन वह सही है कि हम रिपोर्ट की गई घटना की विशिष्टता के अनुपात में अधिक संदेहवादी होते हैं। हाल ही में किसी करीबी दोस्त को देखने, हाल ही में संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति को देखने, हाल ही में बेन फ्रैंकलिन को देखने या हाल ही में भगवान को देखने की रिपोर्ट की तुलना करें।

6. किसी चमत्कार के बारे में गवाही को तब तक स्वीकार नहीं करना चाहिए जब तक कि सभी विकल्प चमत्कार से ज़्यादा चमत्कारी न हों। ह्यूम यहाँ गारंटी देते हैं कि हम कभी भी चमत्कार की रिपोर्ट को स्वीकार नहीं करेंगे, और शायद तब भी नहीं जब हमने खुद देखा हो, क्योंकि गवाह झूठ बोल सकते हैं, और हमारी इंद्रियाँ हमें धोखा दे सकती हैं। यहीं पर समस्या है।

ह्यूम हमें चमत्कारों को स्पष्ट करने के लिए कहेंगे, भले ही वे घटित हों। कोई भी व्यक्ति निश्चितता का स्तर इतना ऊंचा नहीं रख सकता कि वह कभी चमत्कार को स्वीकार ही न कर सके। यह एक खतरनाक रणनीति है।

अब हम चमत्कारों की व्यावहारिक अप्रासंगिकता की ओर बढ़ते हैं। यह कांट के तर्क का न्यूमैन-गेस्लर-ब्राउन संस्करण है। 1. हम चीजों को उस तरह नहीं जान सकते जैसे वे वास्तव में हैं, बल्कि केवल उसी तरह जान सकते हैं जैसे वे हमें दिखाई देती हैं।

2. इसलिए, ईश्वर और पारलौकिक वास्तविकता के बारे में कोई भी दावा किया गया ज्ञान सिर्फ़ अनुचित अटकलें हैं। 3. फिर भी, इस दुनिया में व्यावहारिक रूप से काम करने के लिए, हम नैतिकता और कर्तव्य के आधार के रूप में ईश्वर, स्वतंत्रता और अमरता को मानते हैं। 4.

चमत्कार या तो रोज़ होते हैं, कभी-कभार या कभी नहीं। अगर रोज़ होते हैं, तो वे चमत्कार नहीं बल्कि प्राकृतिक नियम हैं। अगर कभी-कभार होते हैं, तो हमारे पास उन्हें जानने का कोई आधार नहीं है। इसलिए शायद कभी नहीं।

सच्चा धर्म, जिसमें सभी कर्तव्यों को ऐसे पूरा करना शामिल है जैसे कि वे ईश्वरीय आदेश हों, सही काम करने के लिए किसी चमत्कार की आवश्यकता नहीं होती। चमत्कार व्यक्ति के इरादों को भ्रष्ट कर देते हैं। इसलिए, चमत्कार रोज़मर्रा की ज़िंदगी और सच्चे धर्म के लिए अप्रासंगिक हैं।

कांट का जवाब। खैर, सबसे पहले, वह कहते हैं, हम चीजों को उस तरह नहीं जान सकते जैसे वे वास्तव में हैं, बल्कि केवल उसी तरह जान सकते हैं जैसे वे हमें दिखाई देती हैं। खैर, मेरा जवाब है कि हम चीजों को उस तरह नहीं जान सकते जैसे वे वास्तव में हैं जब तक कि हम यह न जान लें कि वे वास्तव में कैसी हैं।

पहला कथन आत्म-पराजयकारी है। हम सोच सकते हैं कि हम नहीं जान सकते कि वे वास्तव में कैसे हैं, लेकिन हम नहीं जानते। हम ईश्वर के बारे में किसी भी दावे के पीछे नहीं हैं, और पारलौकिक वास्तविकता केवल अनुचित अटकलें हैं।

खैर, ईश्वर, जो सभी चीजों को वैसे ही जानता है जैसे वे वास्तव में हैं, हमें वह बता सकता है जो हमें इन पंक्तियों के अनुसार जानने की आवश्यकता है क्योंकि उसने हमारी क्षमताओं का निर्माण किया है और हमारी सीमाओं को जानता है। बेशक , रहस्योद्घाटन का हर दावा वैध नहीं है। फिर भी, इस दुनिया में व्यावहारिक रूप से कार्य करने के लिए, कांट कहते हैं, हम नैतिकता और कर्तव्य के आधार के रूप में ईश्वर, स्वतंत्रता और अमरता को मानते हैं।

ईश्वर, स्वतंत्रता और अमरता वास्तव में नैतिकता और कर्तव्य के लिए आधार हैं, लेकिन कांट की ज्ञानमीमांसा वाले लोगों में इनको नकारने वाले संशयवाद की ताकतों के खिलाफ खड़े होने की ताकत नहीं है। सीएस लुईस ने अपने रूपक, पिलग्रिम्स रिग्रेस में इसी समस्या को दिखाने का अच्छा काम किया है। अगर आप बस इतना कहते हैं, ठीक है, यह नैतिकता और कर्तव्य का आधार बनता है, तो एक संशयवादी कह सकता है, तो क्या? हम नहीं जानते कि यह वास्तव में सच है या नहीं, और मैं वही करने जा रहा हूँ जो मैं चाहता हूँ।

वास्तव में, हमारे इतिहास में ऐसे लोग हमेशा से रहे हैं। 4. चमत्कार या तो रोज़ होते हैं, कभी-कभार होते हैं, या कभी नहीं होते। अगर रोज़ होते हैं, तो चमत्कार नहीं, बल्कि प्राकृतिक नियम, अगर कभी-कभार होते हैं, तो उन्हें जानने का कोई आधार नहीं, इसलिए शायद कभी नहीं।

5. यीशु ने धरती पर अपनी सेवकाई के दौरान संभवतः प्रतिदिन चमत्कार किए होंगे, और मानव इतिहास में शायद ही कभी किसी अन्य समय में ऐसा हुआ हो। हम यह सुझाव नहीं दे रहे हैं कि हम किसी चमत्कार को पूरी तरह से समझ लेंगे या पूरी तरह से निश्चित हो जाएँगे कि कोई घटना चमत्कारी थी या नहीं, लेकिन कुछ चमत्कार उपलब्ध संभावनाओं को समाप्त कर देते हैं। न्यायियों 6:36-40, या 1 शमूएल 6:1-9, 1 शमूएल 3:1 देखें, चमत्कार दुर्लभ हैं।

बालक शमूएल ने एली के अधीन यहोवा के सामने सेवा की। उन दिनों यहोवा का वचन दुर्लभ था, बहुत से दर्शन नहीं होते थे। न्यायियों 6:12, जब यहोवा का दूत गिदोन के सामने प्रकट हुआ, तो उसने कहा, यहोवा तेरे साथ है, वीर योद्धा।

लेकिन सर गिदोन ने उत्तर दिया, "यदि प्रभु हमारे साथ है, तो यह सब हमारे साथ क्यों हुआ? ये सभी चमत्कार कहाँ हैं जिनके बारे में हमारे पूर्वजों ने हमें बताया था जब उन्होंने कहा था, क्या प्रभु हमें मिस्र से नहीं निकाल लाया? लेकिन अब प्रभु ने हमें त्याग दिया है और हमें गिदोन के हाथ में सौंप दिया है। संभावनाओं को समाप्त करें। न्यायियों 6, 36-40, गिदोन ने परमेश्वर से कहा, " यदि आप अपने वचन के अनुसार मेरे हाथ से इस्राएल को बचाएँगे, तो देखिए, मैं खलिहान में ऊन का एक टुकड़ा रखूँगा।

यदि ऊन पर केवल ओस हो और सारी भूमि सूखी हो, तो मैं जान लूंगा कि तू मेरे हाथ से इस्राएल को बचाएगा, जैसा कि तूने कहा था। और ऐसा ही हुआ। अगले दिन गिदोन सुबह उठा, ऊन को निचोड़ा, ओस को निचोड़ा, और एक कटोरा पानी से भर दिया।

तब गिदोन ने परमेश्वर से कहा, " मुझ पर क्रोध मत करो। मुझे एक और प्रार्थना करने दो। मुझे ऊन के साथ एक और परीक्षा करने दो।"

इस बार ऊन को सुखा दो और ज़मीन को ओस से ढँक दो। उस रात परमेश्वर ने ऐसा ही किया। केवल ऊन ही सूखी थी, और पूरी ज़मीन ओस से ढँक गई थी।

खैर, आप वास्तव में इस तरह की किसी चीज़ पर बहुत जल्दी संभावनाओं को समाप्त कर देते हैं। जब गिदोन दो परीक्षण सेट करता है, तो वे मेल खाते हैं, वे रिवर्स टेस्ट हैं, और वे यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि आप जलवायु को इतनी जल्दी कैसे बदल सकते हैं। इस तरह की सभी चीजें बहुत पेचीदा हैं , है न? एक और उदाहरण, 1 शमूएल 6:1। जब प्रभु का सन्दूक सात महीने तक पलिश्तियों के इलाके में रहा, तो पलिश्तियों ने पुजारियों और ज्योतिषियों को बुलाया और कहा, हम प्रभु के सन्दूक के साथ क्या करें? हमें बताएं कि हम इसे वापस अपने स्थान पर कैसे भेजें। वे कुछ काफी भयंकर महामारी का सामना कर रहे थे, और कोई भी शहर इसे और नहीं चाहता था।

खैर, कुछ श्लोकों के बाद, पुजारी और ज्योतिषी जवाब देते हैं, तुम मिस्रियों और फिरौन की तरह अपने दिलों को कठोर क्यों बनाते हो? जब परमेश्वर ने उनके साथ कठोर व्यवहार किया, तो क्या उन्होंने इस्राएलियों को बाहर नहीं भेजा ताकि वे अपने रास्ते पर जा सकें? अब, दो गायों के साथ एक नई गाड़ी तैयार करें जो बछड़े दे चुकी हों और जिन्हें कभी जोड़ा ही न गया हो। गायों को गाड़ी में बांधें, लेकिन उनके बछड़ों को अलग करके उन्हें बाँध दें। प्रभु का सन्दूक लें, उसे गाड़ी पर रखें, और उसके बगल में एक संदूक में सोने की वस्तुएँ रखें जिन्हें आप अपराध-बलि के रूप में वापस भेज रहे हैं।

उसे उसके मार्ग पर भेज दो, लेकिन उस पर नज़र रखो। यदि वह अपने देश बेतशेमेश की ओर चला जाता है, तो यहोवा ने हम पर यह बड़ी विपत्ति ला दी है। लेकिन यदि वह नहीं आता है, तो

हम जान लेंगे कि यह उसका हाथ नहीं था जिसने हमें मारा, बल्कि यह हमारे साथ संयोग से हुआ।

खैर, यह वास्तव में फिर से एक बहुत ही चतुर परीक्षण है, और आपको वास्तव में इस तरह की चीज़ों के लिए उस परीक्षण को एक अच्छा परीक्षण न बनाने के तरीकों को समझने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। आखिरकार, भविष्यवक्ता पहले से ही आपको उन गायों को रखने के लिए कह चुके हैं जिन्होंने पहले कभी गाड़ी नहीं खींची थी और उनके बछड़ों को दूर ले गए, जिसके पास वे वापस जाना चाहेंगे, और फिर देखेंगे कि यह क्या करता है। यह जो करता है वह यह संकेत देता है कि भगवान गायों के माध्यम से सन्दूक को वापस ले जाने वाले थे।

इसलिए, मुझे लगता है, यह सुझाव देता है कि हम संभावनाओं को समाप्त कर सकते हैं और, इसलिए, हम एक चमत्कार को एक गैर-चमत्कार से अलग कर सकते हैं, जो कि मनुष्य के पास रोज़मर्रा के निर्णय लेने के लिए निश्चितता के स्तर पर है। कांट का जवाब 5. सच्चा धर्म, जिसमें सभी कर्तव्यों को पूरा करना शामिल है जैसे कि वे ईश्वरीय आदेश हों, सही काम करने के लिए किसी चमत्कार की आवश्यकता नहीं है। चमत्कार व्यक्ति के इरादों को भ्रष्ट करने की प्रवृत्ति रखते हैं।

यह सच है कि सच्चे धर्म को सही काम करने के लिए किसी चमत्कार की ज़रूरत नहीं है, लेकिन मनुष्य अब सही काम करने में सक्षम नहीं है, और उसे इस समस्या को हल करने के लिए प्रायश्चित और पुनर्जन्म के एक मुक्तिदायी चमत्कार की ज़रूरत है। शास्त्रों के चमत्कार उद्धारक परमेश्वर की ओर इशारा करते हैं, जो हमारे उद्धार के लिए हस्तक्षेप करने में सक्षम और इच्छुक है। 6. इसलिए, चमत्कार रोज़मर्रा की ज़िंदगी और सच्चे धर्म के लिए अप्रासंगिक हैं।

चमत्कार केवल गैर-मुक्तिवादी धर्मों जैसे कि ईश्वरवाद और धार्मिक उदारवाद के लिए अप्रासंगिक हैं, जिनमें से कोई भी हमें अंतिम निर्णय में बचाने वाला नहीं है। ठीक है, हम दूसरे पर चलते हैं। प्राचीन अज्ञानता और चमत्कार, एडोल्फ हार्नैक।

यह हार्नेक के तर्क का मेरा संस्करण है। 1. प्राचीन काल में लोग सोचते थे कि चमत्कार हर दिन होते हैं, इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि यीशु, प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के मंत्रालय में चमत्कारों की सूचना दी गई थी। 2. प्राचीन काल में लोग प्रकृति और उसके नियमों को नहीं समझते थे, इसलिए वे अक्सर प्राकृतिक घटनाओं को चमत्कार समझ लेते थे।

हर्नैक को जवाब। उनका पहला कथन। प्राचीन काल में लोग सोचते थे कि चमत्कार हर दिन होते थे, इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि यीशु, प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की सेवकाई में चमत्कारों की सूचना दी गई थी।

2. प्राचीन काल में और आज भी ऐसे लोग हैं जो मानते हैं कि चमत्कार हर दिन होते हैं। 3. तब और आज भी ऐसे लोग हैं जो चमत्कारों को पूरी तरह से नकारते हैं। उस समय ये लोग एपिकुरियन और सदूकी थे।

4. संभवतः, आज पहले से ज़्यादा संशयवादी हैं, लेकिन संभवतः संशयवादी और रोज़ाना चमत्कार करने वाले लोग दोनों ही गलत हैं। 5. किसी भी मामले में, यह व्यापक रूप से महसूस किया गया था कि जॉन द बैपटिस्ट ने चमत्कार नहीं किए थे, जॉन 10:41, इसलिए उन्हें प्रसिद्ध भविष्यवक्ताओं के बारे में रिपोर्ट करने की ज़रूरत नहीं थी, और सदूकियों ने महसूस किया कि उनके लिए यह अस्वीकार करना असंभव था कि यीशु ने चमत्कार किए थे, जॉन 9:18, 11, 47, 12:10, और प्रेरितों के काम 4:16 की तुलना करें। 2. प्राचीन काल में लोग प्रकृति और उसके नियमों को नहीं समझते थे, इसलिए वे अक्सर प्राकृतिक घटनाओं को चमत्कार समझ लेते थे। यह मूल रूप से बेतुका है।

यीशु के किसी भी चमत्कार को आसानी से गलत समझी जाने वाली प्राकृतिक घटनाओं में नहीं बदला जा सकता। और यही वह बात है जिसके बारे में पहले के उदारवादियों को यीशु के बादलों में पहाड़ी पर चढ़ने, लोगों द्वारा अपना दोपहर का भोजन साझा करने और इस तरह की अन्य बातों के बारे में बहुत आलोचना मिली थी। यीशु के किसी भी चमत्कार को आसानी से गलत समझी जाने वाली प्राकृतिक घटनाओं में नहीं बदला जा सकता, कम से कम एक समूह के रूप में तो नहीं।

तीन ऐसे मामले हैं जिनमें गलत तरीके से मौत का निदान किया गया था और जो यीशु के प्रकट होने पर फिर से जीवित हो गए। यीशु पानी पर चलने के बजाय किनारे या रेत के टीले पर चल रहे थे, आप जानते हैं, मुझे थोड़ा आराम दें। अंत में, हम एक बंद ब्रह्मांड में चमत्कारों को देखते हैं।

रुडोल्फ बुल्टमैन। बुल्टमैन के तर्क का यह मेरा संस्करण है। 1. आधुनिक विज्ञान और इतिहास इस धारणा पर काम करते हैं कि हमारा ब्रह्मांड कारण और प्रभाव की एक बंद प्रणाली है ताकि वे जो हो रहा है उसका वर्णन, व्याख्या और भविष्यवाणी कर सकें।

यहां तक कि कट्टरपंथी भी व्यावहारिक रूप से इसी तरह काम करते हैं जब वे बिजली, आधुनिक चिकित्सा और आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हैं। 2. प्रकृति के बारे में पुराना पौराणिक दृष्टिकोण यह था कि भगवान, देवदूत, राक्षस आदि बिजली, बीमारी, भूकंप और तूफान के प्रत्यक्ष कारण थे।

आज, हम बेहतर जानते हैं। बुल्टमैन का जवाब। आधुनिक विज्ञान और इतिहास इस धारणा पर काम करते हैं कि हमारा ब्रह्मांड कारण और प्रभाव की एक बंद प्रणाली है, ताकि वे जो हो रहा है उसका वर्णन, व्याख्या और भविष्यवाणी कर सकें।

वे उस धारणा पर काम करते हैं, लेकिन न तो आधुनिक विज्ञान और न ही इतिहास यह जानने के लिए पर्याप्त जानता है कि ब्रह्मांड एक बंद प्रणाली है। यह इस अर्थ में एक प्रणाली प्रतीत होती है कि समान कारण निकट दूरी पर काम कर रहे हैं, जितना हम बता सकते हैं, लेकिन हम नहीं जानते कि ब्रह्मांड की उत्पत्ति, न ही जीवन की उत्पत्ति, न ही ब्रह्मांड के पीछे एक दिमाग के अलावा प्रकृति में स्पष्ट डिजाइन के हड़ताली उदाहरणों को कैसे समझाया जाए। हमारे पास निश्चित रूप से इस बात की कोई पूरी व्याख्या नहीं है कि इतिहास क्या है और न ही इस बात का कोई सबूत है कि यह अर्थहीन है।

बिजली, आधुनिक चिकित्सा और आधुनिक तकनीक की खोज ईसाई धर्मवाद से असंगत नहीं है, और कई ईसाई उनकी खोज में शामिल थे। प्रकृति के बारे में पुराना पौराणिक दृष्टिकोण यह था कि भगवान, देवदूत, राक्षस, आदि बिजली, बीमारी, भूकंप और तूफान के प्रत्यक्ष कारण थे। आज, हम बेहतर जानते हैं।

खैर, ईसाई और अन्य लोगों ने कभी-कभी कल्पना की है कि वे भगवान, शैतान, स्वर्गदूतों और राक्षसों के बारे में बहुत कुछ जानते हैं, जितना वे वास्तव में जानते थे। आप देखते हैं कि कई जगह शास्त्रों में और बहुत सारे चर्च के इतिहास में हैं। लेकिन बाइबल कहीं भी यह नहीं कहती है कि भगवान बिना मध्यस्थता के प्रकृति को चलाते हैं, या कि शैतान और राक्षस बीमारी के एकमात्र कारण हैं, आदि।

आज हम चिकित्सा या मौसम के बारे में इतना नहीं जानते कि यह कह सकें कि इनमें से किसी में भी कभी कोई अलौकिक हस्तक्षेप नहीं होता, और ऐसी घटनाओं के लिए ईश्वर का दैवीय मार्गदर्शन तो और भी कम है। क्या चमत्कार वास्तविक हैं? ईश्वरीय हस्तक्षेप और सृष्टि के लिए अच्छे सबूत हैं। हमारे क्षमाप्रार्थी पाठ्यक्रम में इस पर विस्तार से चर्चा की गई है।

ब्रह्मांड की उत्पत्ति, ब्रह्मांड में डिजाइन, उत्पत्ति 1 और पृथ्वी की उत्पत्ति के बीच संबंध, जीवन की उत्पत्ति, जीवित चीजों में प्रमुख शरीर योजनाओं की उत्पत्ति और मानव जाति की उत्पत्ति। इसलिए, मैं आपकी सराहना करूंगा यदि आप हमारी वेबसाइट www.ibri.org पर हमारे IBRI पावरपॉइंट्स पर एक नज़र डालें। इतिहास में ईश्वरीय हस्तक्षेप के अच्छे सबूत हैं। बाइबिल सेमिनरी में हमारे बाइबिल फाउंडेशन और सिनॉप्टिक गॉस्पेल कोर्स में और फिर हमारी IBRI वेबसाइट पर भी इस पर कुछ विस्तार से चर्चा की गई है।

इज़राइल की उत्पत्ति, पूर्ण हुई भविष्यवाणी, ईसाई धर्म की उत्पत्ति, और यीशु की सेवकाई की घटना, जिसमें उनके दावे और चमत्कार के विवरण, विशेष रूप से उनका पुनरुत्थान शामिल है। यदि आप जेफरसन बाइबिल के बारे में सोचते हैं, जिसके बारे में आपने सुना हो या नहीं सुना हो, तो जेफरसन एक नास्तिक है। मूल रूप से, उसे एक संतोषजनक सुसमाचार विवरण देने के लिए, उसे यीशु के सभी दावों, उनके द्वारा किए गए चमत्कारों और पुनरुत्थान को हटाना पड़ा।

वर्तमान में ईश्वरीय हस्तक्षेप के अच्छे सबूत मौजूद हैं। आधुनिक समय में चमत्कारों की आवृत्ति पर ईसाई असहमत हैं। इसलिए, एक तरफ करिश्माई लोग हैं और दूसरी तरफ उदारवादी, अगर आप चाहें तो।

लेकिन, धर्मांतरण की घटना, व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर, ये घटनाएँ चौंकाने वाली हैं। खैर, यह मूल रूप से चमत्कार के खिलाफ तर्कों का हमारा दौरा है। जब आप उन्हें सुनते हैं तो वे मजबूत लगते हैं, लेकिन जब आप उनका विश्लेषण करते हैं, तो पता चलता है कि उनमें कुछ गंभीर समस्याएं हैं।

जब आप वास्तव में प्रकृति और इतिहास आदि को देखते हैं, तो निश्चित रूप से वहाँ ऐसी चीजें हो रही हैं, जिनका उत्तर दुनिया के गैर-अलौकिक दृष्टिकोण से संतोषजनक ढंग से नहीं दिया जा

सकता। अब हम इस श्रृंखला में अपनी भावी वार्ताओं में यीशु के चमत्कारों को देखने और चर्चा करने की उम्मीद करते हैं कि क्या हो रहा है और यह हमें यीशु के बारे में क्या बता रहा है। ठीक है, हम यहाँ हैं।

हमें क्या मिलेगा? अभी 10 नहीं हुए हैं। खैर, फिर हम कुछ और को चीरना शुरू कर सकते हैं। मुझे नहीं पता कि उन्हें कितना समय लगेगा।